>

Title: Regarding third degree method adopted by police personnel in and outside the police stations in the country.

श्री शत्रुघ्न सिन्हा (पटना साहिब): महोदय, आज मैं उस चर्चा को उठाना चाहता हूं, मैं पूरे सदन में उसका जिक्र करना चाह रहा हूं, वह चर्चा करना चाह रहा हूं, जो सालों से हो रही है, लेकिन शायद अभी तक उसका वह रिजल्ट नहीं आ रहा है, जो आना चाहिए। मैं सिर्फ सरकार की बात नहीं कर रहा हूं, मैं सरकारों की बात कर रहा हूं और समाज की बात कर रहा हूं। कुछ दिन पहले अभी पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी के 60 साल मनाया गया है। आजादी के इतने साल हो गए हैं, अभी हम इसका जश्न मना ही रहे थे कि तब तक हमारे अंडमान निकोबार के एम.पी. विÂष्णु पद राय जी ने ज्वाइंट सेक्रेटरी या किसी पदाधिकारी की ज्यादिती का जिक्र किया, उन्होंने बताया कि उन्हें धक्का मारा गया, शायद उसकी इंक्वायरी चल रही है। उन्हें धक्का मारा गया, उन्हें अपशब्द कहे गए, उनकी बेइज्जती हुयी, यानी पूरी संसद की बेइज्जती हुयी। हम सब उसी संसद के भाई हैं, भले ही अलग-अलग पार्टी से हों। आज मैं अपनी बात को उस बात के साथ जोड़ते हुए पूरे सदन का सहयोग और आशीर्वाद चाहूंगा। महोदय, मैं आपके जरिए सबका ध्यान आकर्षित करता हूं कि इतने साल हो गए हैं, ऑफिशियल्स की हाई हैंडेडनेस या पुलिस ऑफिशियल्स की ब्रुटैलिटी, मिसबिहैवियर, एब्यूजिव लैंगुएज, थर्ड डिग्री मैथड अब तक चला आ रहा है। अभी-अभी हमने कुछ बच्चों का फोटोग्राफ देखा, पुलिस की ज्यादिती की तस्वीर देखी कि कुछ बच्चों को चैन से जकड़कर रखा है। कभी तस्वीर देखते हैं किसी को पेड़ से उल्टा लटका कर मारते हुए, कभी तस्वीर देखते हैं कि कोई सूसाइड कर रहा है, कोई बुरी तरह प्रताड़ित हुआ है। आखिर कैसे इसका खात्मा होगा? यह मामला कांग्रेस का, आरजेडी का, बीजेपी का या तमिलनाडू और बिहार का नहीं है, यह पूरे देश का मामला है, पूरे सदन का मामला है, हम सबके परिवार का मामला है। जब यहाँ पर बात लाई जाती है तो इसमें सदन का पूरा सहयोग मिलता है, सदन का आशीर्वाद मिलता है, लेकिन फिर उसकी इनक्वायरी के बाद मालूम नहीं कि क्या होता है। अभी तक क्या-क्या हुआ शायद हममें से बहुतों को नहीं पता।

मैं यह कहना चाहता हूँ कि 18.10.2005 की घटना को पूरे सदन ने और पूरे देश ने देखा होगा। चूँकि यहाँ नाम लेना मना है, इसलिए मैं कहूँगा कि बिहार में तत्कालीन एस.पी. द्वारा हमारे केन्द्र के मंत्री जयप्रकाश यादव के भाई को बहुत ही बूटली मारते हुए दिखाया गया और वहाँ के अधिवक्ता भी थे। यह रिकार्ड पर है इसलिए नाम ले सकता हूँ - रिकार्ड पर है उनके भाई को बुरी तरह मारते हुए, गालियाँ देते हुए वहाँ के तत्कालीन एस.पी. का नाम चूँकि वहाँ रिकार्ड पर है, इसलिए दे रहा हूँ। उसके बाद वहाँ के अधिवक्ता अशोक कुमार को इतनी बुरी तरह मारा गया कि पूरे देश ने उसको टीवी पर कई बार देखा। ऐसे कई केसेज़ हुए हैं - यहाँ के, तमिलनाडू के, आंध्र प्रदेश के, पंजाब के, हर तरफ के केसेज़ हुए हैं। उसके बाद आज तक मैंने नहीं सुना कि उस पर कोई इनक्वायरी हुई या उस पर कोई प्रतिक्रिया हुई हो। मैं एक घटना का ज़िक्र नहीं कर रहा हूँ, घटनाओं का ज़िक्र कर रहा हूँ। आखिर क्या बात है कि आज एक से एक पुलिस स्टेशन जहाँ हैं, हम पुलिस के लिए क्या क्या नहीं कर रहे हैं, और क्या क्या नहीं सोच रहे हैं? सारे पुलिस वाले भी ऐसे नहीं हैं, हमारी पुलिस बहुत अच्छी है, हमारे देश की पुलिस की वजह से ही हम चैन की नींद सोते हैं, हमारे देश की पुलिस की वजह से ही हम होली दीवाली और ईद इतनी अच्छी तरह से मनाते हैं, लेकिन ब्लैकशीप फोर्सेज़ में हैं, हर फोर्सेज़ में हैं, उनका आखिर क्या इलाज है? मैं सुझाव देना चाहता हूँ कि पहले तो अगर ऐसी बात ही नहीं हो, तो ठीक है। अगर हो, तो उस पर सोसाइटी की तरफ से उनके इंटैरोगेशन रूम में, पुलिस स्टेशन में, मोहल्ला कमेटी, या सोसाइटी के कोई इंटैलैक्चुअल्स या प्रोफैशनल्स की कोई कमेटी हो, जो कभी भी वहाँ पर बिना बताए हुए जा सके और देख सके कि वहाँ ब्रूटैलिटी हो रही है या नहीं, ज़्यादती हो रही है या नहीं।

दूसरा, अगर मेरे सुझाव का कोई असर पड़े तो मैं यही सुझाव देना चाहूँगा कि आज पोस्टमार्टम की वीडियोग्राफी होती है, ऑपरेशन की वीडियोग्राफी होती है, पार्लियामैंट में हम जो बात करते हैं, क्लोज़ सर्किट कैमरा से हमें कैप्चर किया जा रहा है। तो फिर पुलिस स्टेशन हो या सीबीआई हो या ऐसी कोई भी एजेन्सी हो, इसकी हर इनक्वायरी को वीडियोग्राफ़ करना चाहिए ताकि हमें पता चल सके कि दूध का दूध और पानी का पानी क्या है, हमें पता चल सके कि इनकी ज़ोर-ज़्यादतियों का क्या सिला है और इनकी ज़ोर ज्यादतियों को कैसे रोक सकते हैं। यह बहुत ज़रूरी है। अब बात बहुत बढ़ गई है। असत्य का सहारा, सोर्सेज़ का सहारा, इनफ्लूंस का सहारा लेकर ये लोग बात दबाते हैं और इनक्वायरी में बहुत देरी हो चुकी होती है। साथ ही साथ हमने कहा कि भ्रष्टाचार के मामले में या दूसरे मामले में आज सब स्पेशल कोर्ट्स की बात कर रहे हैं। आज आमिर खान सत्यमेव जयते जैसा इतना बढ़िया प्रोग्राम लेकर देश के लिए आए हैं। आज वे भी कहते हैं कि फीमेल फीटीसाइड पर स्पेशल कोर्ट्स होने चाहिए। मैं यही अपील करना चाहूँगा आप तमाम लोगों की तरफ से कि एक तो सारा इंटैरोगेशन पुलिस स्टेशन के बाहर जो सो-कॉल्ड एनकाउंटर करते हैं, और पुलिस स्टेशन के अंदर जो इंटैरोगेशन होती है, उसका रिकार्ड होना चाहिए, वीडियोग्राफी होनी चाहिए और दूसरी बात कहना चाहता हूँ कि ऐसे लोगों से डील करने के लिए, पुलिस की ज़्यादतियों के लिए, पुलिस की बर्बरता के लिए, पुलिस के मिसबिहेवियर, अत्याचार, अनाचार और दुराचार के लिए स्पेशल कोर्ट्स का गठन होना चाहिए। जब हमारे क्राइम्स के लिए स्पेशल कोर्ट्स का गठन हो रहा है तो उनके क्राइम्स के लिए भी स्पेशल कोर्ट्स का गठन होना चाहिए। लॉ सबके लिए एक समान है। हम अगर अपने हाथ में कानून लेते हैं तो पुलिस हमें पकड़ती है। अगर पुलिस अपने हाथ में कानून ले रही है और डंडा चल रही है, डंडे से सिर तोड़ रही है तो उसके लिए भी स्पेशल कोर्ट होनी चाहिए और उसका जल्द से जल्द इलाज होना चाहिए। मैं इस पर पूरे सदन का सहयोग और समर्थन चाहता हूँ। ...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: S/Shri Kamal Kishor 'Commando', Uday Pratap Singh, Ravindra Kumar Pandey, Shri Arjun Ram Meghwal and Virendra Kumar are allowed to associate with the matter raised by Shri Shatrughan Sinha.